वर्तमान संदर्भ में कबीर की प्रासंगिकता

श्रीमति विकेश बाला

महान विचारकों तथा साहित्यकारों और कवियों के काव्य का कथ्य जिन तथ्यों ,समस्याओं एंव सत्य का दर्शन कराता है उनकी प्रासंगिकता कभी समाप्त नहीं होती है। क्योंकि वे सत्य मानव जीवन के मूलभूत सत्य होते है। भले ही कबीर का जन्म आज से कई शताब्दी पूर्व हुआ हो किन्तु उनकी शिक्षाएं आज भी प्रांसगिक है। उस समय की अपेक्षा उन शिक्षाओं की आवश्यकता आज अध्कि है।

कबीर संत काव्य धरा के प्रतिनिध्ि कवि है। कबीर की भक्ति, उनका दर्शन और उनकी कविता सामाजिक चेतना से ओत प्रोत है। कबीर निरक्षर थे। उन्होने सामाजिक उपेक्षा के दंश को झेला था। उन्होने सुनी सुनाई बातो पर विश्वास नहीं किया बल्कि जो भी सुना उसे जीवन की प्रयोगशाला में परखा और परखने के बाद यदि बात खरी निकली तो उसे समाज के सामने रखा अन्यथा नही।

कहा जाता है कि कबीर जैसा व्यंगकर्ता पिछले हजार सालो मे पैदा नही हुआ। आचार्य शुक्ल और आचार्य द्विवेद्वी ने कबीर के व्यंग की आक्रामकता को महत्वपूर्ण माना है। कबीर का व्यंग कुछ ऐसा था कि सामने वाला तिलमिला कर ध्राशायी हो चुका हो व कहने वाला मन्द–मन्द मुस्कुरा रहा हो कबीर का जन्म ऐसे समय मे हुआ जब समाज अनेक बुराईयों से ग्रस्त था। छुआ–छुत , अंधविश्वास, रुढिवादिता का बोलबाला था। धर्मिक पाखंड अपनी चरमसीमा पर था।

यह निर्विवाद सत्य है कि आज का युग कबीर के युग से भिन्न हो चुका है। कबीर के युग मे राजाओं और सामन्तो का साम्राज्य था तो आज प्रजातन्त्रा है । जबकि आज का वातावरण कबीर के युग के वातावरण के समान हैं । परन्तु कबीर दास ने अपनी रचनाओं में जिन समस्याओं और विसंगतियों को उठाया है वे आज के समाज में भी विद्यमान हैं।

जाति–पाति का विरोध् और वर्ण व्यवस्था पर करारा व्यंग कबीर को रचनाओं में सर्वत्रा दिखाई पड़ता हैं। कबीर ने ऐसी कुरीतियां का जमकर खण्डन किया। ऊँच नीच तथा भेदभाव की यह समस्या जैसी कबीर के समय में थी आज उससे भी ज्यादा घातक रूप धरण कर चूकी हैं। कबीर के समय में ब्राहमणों का वर्चस्व था । शूद्रों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था यही स्थिति समाज में आज भी है । आज भी जाति के नाम पर लोगों को मंदिर में प्रवेश करने से मना करने की घटनाएं सामने आती रहती हैं। कबीर ने उच्च वर्ग के लोगों को ललकारा तथा खरी –खरी कही और अपनी नीची जाति होने की बात को डंके की चोंट पर स्वीकारा। वें स्वयं को ऊँचा मानने वाले ब्राहमणों से पूछते हैं –

''जे तू बाहमन बाहमनी जाया

और राह ते क्यू नही आया''।

आज समाज को कबीर की शिक्षाओं पर अमल करने की जरूरत है। कबीर के अनुसार ब्राहमण और शुद्र ईश्वर ने नहीं बनाये । यह भेद तो हमने उत्पन्न कर दिया है।

''एकै बूॅंद एकै मल मूतर

एक चाम एक गूदा ।

एक जाति में सब उपजाना

को बामन को सूदा'' ।।

धर्मिक पाखण्डों का कबीर ने जमकर विरोध किया। उन्होनें धर्म के नाम पर कर्मकाण्ड, पाखण्ड और अंधविश्वास को पफलते–पफूलते देखा था। कबीर ने धर्म के ठेकेदारों को समाज के भोले –भाले लोगों का लूटते देखा था। अपनी रचनाओं के ऐसे ढोगियों और पाखंडियों की जमकर खबर ली ।

आज भी धर्म के नाम पर जो पाखंड का खेल हमारे चारों तरपफ खेला जा रहा है उसे देखकर कबीर जैसे समाज सुधरक की आवश्यकता अनुभव होती है। जो निर्भिकता से इसका मुकाबला कर सके और अपनी आवाज उठा सके।

आज के धर्मगुरू टेलिविजन के माध्यम से अपनी बात अपने शिष्यों तक पहुँचाते हैं। हर नगर और ग्राम में अनेक धर्मिक आश्रम खोले गए है जहां पर भक्तों की भीड़ जुटानें के लिए लाउड़ स्पीकरों का प्रयोग किया जाता हैं। धर्मिक पोस्टर चिपकाए जाते हैं। कहने का तात्पर्य है कि एक नही आज कई कबीरों की आवश्यकता अनुभव होती है ।

कबीर ने मूर्तिपूजा तथा आड़म्बरों का जमकर विरोध किया है

पाथर पूजै हरि मिलै तो मै पूंजू पहार

तातै तो चाकी भलीए पीसै खाय संसार

कबीर ने साम्प्रदायिकता पर करारा व्यंग किया है। उन्होंनें सर्वधर्म समभाव का संदेश दिया हैं। कबीर के समय में हिन्दु और मुसलमान आपस में लड़ते थे और आज भी लड़ रहे हैं मन्दिर – मस्जिद के नाम पर तब भी दंगें होते थे और आज भी हो रहे हैं। कबीर के विचार आज के माहौल में पहले से भी ज्यादा प्रासंगिक है । कबीर ने हिन्दु मुसलमानों को एकता के सूत्रा में बाध्ने के लिए कहा हैं–

हिन्दू कहता है राम हमारा मुसलमान रहमाना ।

आपस में दोऊ लड़त मरत है मरम कोई नहि जाना ।।

कबीर ने धर्मनिरपेक्षता का मार्ग अपनाया ।वे सच्चे अर्थों में धर्म निरपेक्ष सन्त थे वे न हिन्दू थे ना मुसलमान। वे हिन्दू भी थे और मुसलमान भी थे । अभिप्राय यह है कि उन्होनें धर्मान्ध्ता कभी स्वीकार नही की। कबीर ने उस धर्मनिरपेक्षता का आदर्श प्रस्तुत किया जिसका गुणगान आज भारतीय लोकतन्त्रा करता हैं उन्होंनें सभी ध्र्मों की बुराईयों पर व्यंग किया ।

आज का समाज उनकी शिक्षाओं सें सही मार्गदर्शन पा सकता है।

कथनी करनी की एकता पर कबीर बल देते थे । उनके अनुसार मनुष्य की कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिए। केवल बातें करने से मनुष्य महान नहीं बन सकता। जब तक उसके विचार और आचरण महान नही होते है। आज के भाषणवादी युग में बहुत बड़े आदर्शों की बातें होती है किन्तु व्यवहार उसके विपरीत दिखाई देता है । आज के नेता सिपर्फ कोरे आदर्शवादी हैं। उनका वास्तविक आचरण बिल्कुल विपरीत होता है। कबीर ने वचन और कर्म की एकता पर बल दिया है।

कबीर ने अपनी साखियों पदों आदि में सभी स्थलों पर गुरू की महत्ता पर बल दिया हैं। परन्तु वो अज्ञानी व्यक्ति को गुरू मानने से मना करते हैं वे पहले ही सचेत कर देते है कि गुरू वही होता है जो मार्ग दर्शक बनकर बाधओं का पार करवा दें । वे अज्ञानी को गुरू बनाने से बचने के लिए सचेत कर देते है–

जाका गुरू भी अंध्ला चेला खरा निरंध ।

अंध अंध ठे लिया दोन्यू कूप पडन्त ।।

आज हमारे समाज में गुरू बनाने की परंपरा तेजी से पफैल रही है । अनेक छदम वेषधरी गुरूओं की बाढ़ सी आ गई है। भोली–भाली जनता अपना परलोक सुधरने के लिए इन कपटी गुरूओं के चंगुल में पफंसती जा रही है। ऐसे में कबीर जैसे कवियों द्वारा बताए गए गुरू के लक्षण प्रसंगिक है। सही मार्ग पर चलाने वाला तथा रूढियों और आड़म्बरों सें मुक्त करने वाला ही गुरू माना जा सकता हैं।

भ्रष्ट शासको के विरू(आवाज उठाने कबीर का स्वभाव था उन्होंनें शासकों की निरंकुशता तथा अत्याचारों का डटकर विरोध किया। बिना डरे शासको की आलोचना की हैं।

वर्तमान में राजनीति में व्यस्त भ्रष्टाचार एक बिमारी की तरह हैजो आज लाइलाज है। आजकल राजनेताओं की आलोचना करने वाले को राष्ट्र विरोधी बता दिया जाता है। नेताओं के आगे – पीछे घूमने वाले अपने काम निकलवा लेते हैं। कबीर उन साहित्यकाओं तथा विचारकों के लिए एक प्रेरणा है जो बिना डरे और बिना लाग लपेट के शासकों की गलत तथा जन विरोधी नीतियों का खुलकर विरोध करते हैं।

इन समस्याओं के अतिरिक्त कबीर दास ने अपनी रचनाओं में समानता के मौलिक अधिकारों के लिए लगभग छह सौ वर्ष पूर्व संघर्ष किया था। भले ही आज समानता का अधिकार संविधन में वर्णित हैं परन्तु इसका प्रयोग न के बराबर है अब धर्मिक संघर्ष के स्थान पर राजनीतिक प्रयासों द्वारा इस अधिकार को प्रयोग में लाया जा सकता है। जिसके लिए कबीर साहब के विचारों में अवगत होना आवश्यक प्रतीत होता हैं। अतः इस दृष्टि सें भी उनकी रचनाएँ प्रांसगिक है।

आज के साम्प्रदायिक तनाव के वातावरण में और विशाल दलित समाज को प्रगति के मार्ग पर लाने के लिए तथा समाज सें छुआछुत, जाति–पाति के भेदभाव, धर्मिक पाखंड व कुरीतियों आदि को दूर करने के लिए कबीर साहब की रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं। कबीर दास जी की रचनाएँ और शिक्षाएं सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वजनीन हैं।

कबीर एक ऐसे सार्वकालिक कवि हैं जिनकी रचनाएँ न कभी अप्रासंगिक थी न हैं और न होगीं।